बौद्ध दर्शन पर आधारित मूल्य शिक्षा : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

संतोष कुमार यादव *

सार–संक्षेपः–बौद्ध दर्शन में मूल्य शिक्षा की स्थिति, विस्तार एवं वर्तमान में प्रासंगिकता पूर्णतः बौद्धकालीन शिक्षा दर्शन एवं व्यवस्था पर आधारित है, बौद्ध शिक्षा दर्शन एक ओर करोड़ों लोगों में शिक्षा के माध्यम से प्राण फूंकने में समर्थ है तो दूसरी ओर वर्तमान शिक्षा व्यवस्था की कमियों को दूर करने में समर्थ है। प्रस्तुत शोध पत्र में बौद्ध दर्शन के शैक्षिक निहितार्थों का विस्तार से विवेचन किया गया है तथा बौद्ध–शिक्षा–दर्शन की वर्तमान में प्रासंगिकता पर भी विचार किया गया है। बौद्ध दर्शन मूल्य शिक्षा के लिए ऐसी दार्शनिक पृष्ठभूमि प्रदान करता है जो समकालीन भारतीय समाज के लिए उपयोगी एवं व्यवहारिक हो। समकालीन दौर में मूल्य शिक्षा की जरूरत प्रायः सभी समाजों द्वारा समझा जा रहा है और इसे लागू करने के विभिन्न प्रयास हो रहे है। भारत जैसे धर्मनिरपेक्ष एवं बहुतावादी समाज में जो संस्कृति, धर्म एवं भाषा के स्तर पर व्यापक विविधताएं रखता है। मूल्य शिक्षा को बिल्कुल दार्शनिक पृष्ठभूमि से काटकर नहीं देखा जा सकता। बौद्ध दर्शन विश्वदृष्टि, नीति एवं साधना तीनों ही दृष्टियों से मूल्य शिक्षा के लिए बेहद उपयुक्त आधार प्रदान करता है।

परिचयः–बौद्ध दर्शन मूल्य शिक्षा के लिए बहुत जरूरी है। बौद्ध दर्शन की पहचान ही अपने मूलरूप में एक नीतिगत दर्शन की रही है। भगवान बुद्ध एक ऐसे समाज में अपना कार्य आरम्भ करते हैं जो तरह–तरह के मतवादों, कर्मकाण्डों एवं पाखण्डों में लीन था एवं उसका वास्तविक मूल्यगत जीवन क्षीणता का शिकार हो रहा था। उस स्थिति में भगवान बुद्ध ने जिस विश्वदृष्टि को सामने लाया एवं अपने धर्म की स्थापना की यह समकालीन संदर्भ में बेहद महत्वपूर्ण है। भगवान बुद्ध ने बड़े–बड़े तात्विक प्रश्नों को अव्याकुल कहकर उनपर मौन साध लिया एवं व्यवहारिक जीवन को पीड़ा एवं हताशा से दूर करने के निमित शिक्षा दी। समकालीन समाज भी तात्विक प्रश्नों में नहीं उलझना चाहता बल्कि ऐसी दिशा चाहता है जो उसके इहलौकिक जीवन के लिए कारगर हो। बुद्ध ने दुःख को पारमार्थिक सत्य के रूप में प्रतिपादित किया एवं जीवन भर यह प्रयास करते रहे कि उनके बताए आर्य सत्य को लोग समझे। आर्य सत्य की संकल्पना मूल्य शिक्षा के लिए बेहद उपयोगी है।

***शोधार्थी शिक्षाशास्त्र विभाग बी. आर. ए. बी. यू. मुजफरपुर (बिहार)**

व्यक्ति एवं समाज मूल्यों की महत्ता को तब तक नहीं समझ सकता जब तक कि दुःख की समझ न हो। मूल्य का संचार कोई यांत्रिक प्रक्रिया नहीं है। व्यक्ति दुःख एवं दुःख के कारणों को जब गहराई से समझता है और उनके व्याघात एवं असंगतता से परिचित होता है तभी वह संगत एवं मूल्यगत जीवन की ओर बढ़ सकता है। मूल्यगत जीवन कोई शौक का विषय नहीं है बल्कि एक अनिवार्यता है जिसके बिना न तो व्यक्ति की निजी सत्ता ही संचालित हो सेती है और न ही समाज सुव्यवस्थित रूप से चल सकता है। परन्तु यह अनिवार्यता के रूप में तभी स्थापित होती है जब व्यक्ति एवं समाज में दुःख की स्पष्ट समझ हो कि मूल्यगत जीवन के अलावा इस दुःखमय संसार में और कोई विकल्प नहीं है। मूल्य शिक्षा के बुनियाद के रूप में इस प्रकार की विश्व दृष्टि समकालीन संदर्भ में बेहद उपयोगी है। इसके अतिरिक्त बौद्ध नीतिशास्त्र एवं साधना पद्धति के तमाम पहलू भी समकालीन संदर्भ में बेहद प्रासंगिक है। प्रज्ञा–शील समाधि रूपी अष्टांगिक मार्ग, हत्या, चोरी व उपाय कौशल्य की अवधारणा आदि का मूल्य शिक्षा के समकालीन परिप्रेक्ष्य में बेहद महत्व है। मूल्य शिक्षा केवल बौद्धिक विकास न रह जाए बौद्ध मार्ग द्वारा प्रचलित विपस्सना ध्यान को मूल्य शिक्षा के साथ जोड़ना बेहद उपयोगी साबित हो सकता है।

मूल्य शिक्षा वह शिक्षा है जो व्यक्ति को मूल्यों के प्रति प्रशिक्षित करती हैं। वास्तव में मूल्य शिक्षा का तात्पर्य व्यवहारिकता से है। यह वह शिक्षा है जो विद्यालय प्रांगण व उसके बाहर अनौपचारिक रूप से बालक को विकास व उचित दिशा प्रदान करती है। मूल्य शिक्षा का अर्थ है दैनिक जीवन में कौशल एवं व्यक्तित्व के सभी आयामों को समझना। इस शिक्षा के माध्यम से छात्र जिम्मेवारी, अच्छी या बुरी दिशा में जीवन का महत्त्व, लोकतांत्रिक तरीकों से जीवन यापन, अपनी संस्कृति की समझ, महत्त्वपूर्ण सोच आदि को समझ सकते है। मूल्य शिक्षा का मुख्य उद्देश्य है नैतिक और लोकतांत्रिक समाज का निर्माण करना।

मूल्य शिक्षा के माध्यम से व्यक्ति समाज में सकारात्मक मूल्यों के क्षमताओं और अन्य प्रकार के व्यवहार को विकसित करता है जिसमें वह रहता है। मूल्य शिक्षा प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से छात्र को मदद करती है इतना ही नहीं यह उन्हें विकल्प बनाने में भी सक्षम करेगा जो उनकी व्यक्तिगत वृद्धि में मदद करता है। मूल्य शिक्षा धार्मिक, आध्यात्मिक, नैतिक एवं चारित्रिक शिक्षा का प्रतिरूप है। मूल्य शिक्षा सदगुणों की शिक्षा है जिसमें विभिन्न प्रकार के शिक्षा संबंधी गुण, आदर्श, लक्ष्य विशेषता एक साथ जुड़े हुए रहते है। वस्तुतः मनुष्य का जीवन बहुआयामी होता है। उसके आधार पर वह जीवन दर्शन बनाता है। जीवन दर्शन से उनका जीवन मूल्य बनता है। इसी जीवन मूल्य की प्राप्ति हेतु मूल्य शिक्षा का प्रकटन

होता है। प्रत्येक व्यक्ति के जीवन मूल्य, आवश्यकताए पृथक–पृथक होती है इसलिए शिक्षा का उद्देश्य भी भिन्नता युक्त होता है। किन्तु प्रत्येक की आवश्यकता, गुण, आदर्श, लक्ष्य, विशेषता को समाहित कर शिक्षा अपने उद्देश्य, पाठ्यक्रम, शिक्षण विधि को जब व्यवस्थित एवं नियोजित कर लेती है तो समग्र रूप से यही मूल्य शिक्षा कहलाती है। वर्तमान समय में मूल्य शिक्षा को इसी रूप में ग्रहण किया जा रहा है। मूल्य शिक्षा केवल धार्मिक, आध्यात्मिक, नैतिक एवं चारित्रिक शिक्षा नहीं है न केवल सदगुणों की शिक्षा है, बल्कि यह मनुष्य के जीवन को समृद्धिशाली बनाने वाले विविध पक्षों से सम्पृक्त शिक्षा है।

बौद्ध दर्शन में मूल्य शिक्षा की स्थिति, विस्तार एवं वर्तमान में प्रासंगिकता पूर्णतः बौद्धकालीन शिक्षा दर्शन एवं व्यवस्था पर आधारित है, बौद्ध शिक्षा दर्शन एक ओर करोड़ों लोगों में शिक्षा के माध्यम से प्राण फूंकने में समर्थ है तो दूसरी ओर वर्तमान शिक्षा व्यवस्था की कमियों को दूर करने में समर्थ है। प्रस्तुत शोध पत्र में बौद्ध दर्शन के शैक्षिक निहितार्थों का विस्तार से विवेचन किया गया है तथा बौद्ध–शिक्षा–दर्शन की वर्तमान में प्रासंगिकता पर भी विचार किया गया है। वर्तमान शिक्षा प्रणाली उन गरीब बालकों को कोई दूसरा अवसर नहीं प्रदान करती जो इसके संकीर्ण प्रवेश द्वारा में प्रवेश से वंचित रह जाते है या जो सामाजिक या आर्थिक कारणों की विवशता सक त्रस्त होकर इससे बाहर निकल जाते हैं, वर्तमान शिक्षा प्रणाली निहित स्वार्थों की सहायता करने को प्रोत्साहित करती है, यथ स्थितिवाद को प्रोत्साहन देती है तथा शैक्षिक समानता के अवसरों का गला घोंटती है। वस्तुतः वर्तमान शिक्षा प्रणाली दोषयुक्त तथा असमाताओं को बढ़ावा देने वाली है। कह सकते है कि तार्किक चिन्तन एवं अभिवृत्तियों में विकास के साथ–साथ वैज्ञानिक एवं तकनीकी प्रगति में अत्यन्त तीव्र गति से वृद्धि हुई है, इसे बौद्धिक क्रान्ति कहा जा सकता है। वैज्ञानिक एवं तकनीकी की प्रगति ने वर्तमान शिक्षा प्रणाली को भी चुनौती बना दिया है। वर्तमान शिक्षा प्रणाली में जो शिक्षा प्रदान की जा रही है वह शिक्षा अगले दस वर्षों में पिछड़ी मानी जाने लगती है। वर्तमान शिक्षा औपचारिकता के बन्धन में जकड़ी है कि वह पूर्णतः निष्क्रिय होकर मूल उद्देश्य से भटकती जा रही है, वस्तुतः वर्तमान शिक्षा उपाधिधारक बनती जा रही है न कि ज्ञानवर्धक। इसी कारण शिक्षित बेरोजगारी में तीव्र वृद्धि हो रही है। वर्तमान शिक्षा प्रणाली भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति से अलगाव का वातावरण निर्माण कर रही है। वस्तुतः वर्तमान शिक्षा प्रणाली ने देश में अनेक भेद एवं विषमताओं को जन्म दिया है अतः वस्तुतः वर्तमान शिक्षा प्रणाली में देश की आवश्यकताओं की पूर्ति में सक्षम नहीं है, अतएव एक ऐसी शिक्षा प्रणाली की आवश्यकता है जो देश या समाज तथा व्यक्ति की समस्याओं का समाधान कर सके तथा समाज में विलुप्त

नैतिक मूल्यों की पुर्नस्थापना कर सके। यह कार्य बौद्धकाल में प्रचलित शिक्षा व्यवस्था को अंगीकृत कर किया जा सकता है, बौद्ध शिक्षा प्रणाली में समानता का वातावरण था, ऊँच नीच का भेदभाव नहीं था, न ही धनी–निर्धन का भाव। शिक्षा मुक्त हस्त से आचार्यों द्वारा सुयोग्य पात्र को प्रदान की जाती थी, गुरू–शिष्य सम्बन्ध परस्पर सामंजस्यपूर्ण मधुर थे। शिष्य गुरू को यथोचित सम्मान प्रदान करता है। गुरूकुलों में पूर्णतः अनुशासनबद्ध शिक्षा प्रदान की जाती थी, मौखिक तथा लिखित परीक्षणों द्वारा ज्ञान की पुष्टि की जाती थी, स्त्री शिक्षा तथा शूद्र शिक्षा समान रूप से दी जाती थी, समाज में स्नातक का सम्माननीय स्थान था। समाज में एकता का पाठ बौद्ध शिक्षा केन्द्र भली–भांति सफलतापूर्वक पढ़ा रहे थे। अनुसंधानों पर पर्याप्त समय दिया जाता था, नवीनतम अनुसंधानों को प्ररित किया जाता था। अतएव बौद्ध दर्शन में मूल्य शिक्षा की स्थिति या विस्तार के अध्ययन द्वारा बौद्ध शिक्षा प्रणाली का अध्ययन कर प्राप्त निष्कर्षों को वर्तमान शिक्षा में प्रयोग कर वर्तमान शिक्षा प्रणाली में सुधार तथा समुन्नत किया जा सकता है।

निष्कर्षः–निष्कर्ष के तौर पर कहा जा सकता है कि बौद्ध दर्शन मूल्य शिक्षा के लिए ऐसी दार्शनिक पृष्ठभूमि प्रदान करता है जो समकालीन भारतीय समाज के लिए उपयोगी एवं व्यवहारिक हो। समकालीन दौर में मूल्य शिक्षा की जरूरत प्रायः सभी समाजों द्वारा समझा जा रहा है और इसे लागू करने के विभिन्न प्रयास हो रहे है। भारत जैसे धर्मनिरपेक्ष एवं बहुतावादी समाज में जो संस्कृति, धर्म एवं भाषा के स्तर पर व्यापक विविधताएं रखता है। मूल्य शिक्षा को बिल्कुल दार्शनिक पृष्ठभूमि से काटकर नहीं देखा जा सकता। बौद्ध दर्शन विश्वदृष्टि, नीति एवं साधना तीनों ही दृष्टियों से मूल्य शिक्षा के लिए बेहद उपयुक्त आधार प्रदान करता है।

संदर्भ स्रोतः

1. डॉ. रामसकल पाण्डेय, शिक्षा दर्शन, विनोद पुस्तक मंदिर आगरा, 1992. पृ0 12.
2. आर. के. मुखर्जी, प्रचीन भारतीय शिक्षा दर्शन, विकास प्रकाशन, मथुरा, 1989. पृ0 44.
3. आर. एम. मेहता, बौद्ध दर्शन के विभिन्न आयाम, वाणी प्रकाशन, वाराणसी, 1998. पृ0 22.
4. एस. राधाकृष्णन, भारतीय दर्शन, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली, 1998. पृ0 42.
5. एस. एन. दास गुप्ता, भारतीय दर्शन का इतिहास, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर, 2003. पृ0 68.

*****